B.L.D.E. Association's

S. B. Arts & K.C.P. Science College, VIJAYAPUR- 586 103.

ASSIGNMENT

For B.A./ ~~B.Sc.~~ ....IInd..... Semester

2019 - 2020

Name of the Student Shainajabi . G . Nadaf

Roll No. 229 R.C.U. Seat No. A1945314

Subject Hindi (opt)

Assignment No.	Date	Marks Assigned	Marks Obtained	Name and Signature of Teacher	Remarks
1	4/3/20	03	03	Dr. M. B. Patil.	
2					
3					
4					

Scanned by CamScanner

किरण कविता का सारांश

जयशंकर प्रसाद :-

जयशंकर प्रसाद का जन्म काशी के गोवर्धन सराय मुहल्ले के प्रतिष्ठित सुँघनी साहू वैश्य परिवार में सन 1889 को हुआ। इनके पितामह श्री शिवरत्न साहू उदार दानशील तथा काव्यप्रेमी थे। इनके पीता श्री देविप्रसाद साहू विद्वानों और कलाकारों का आदर करते थे। परिवार की परम्परा में ये शिवोपासक रहे। घर पर ही इन्हें संस्कृत, हिन्दी फारसी और उर्दू की शिक्षा दी गयी। क्वींस कॉलिज में इनका नाम लिखाया गया। बारह वर्ष की अवस्था में इनके पिता को देहान्त हो गया।

नौ वर्ष की अल्पायु में ही जयशंकर प्रसाद ने कलाधर नाम से एक सवैया की रचना की। पहले ये ब्रजभाषा में रचना करते रहे बाद में खड़ी बोली को काव्य-रचना का आधार बनाया। सन 1918 ई में चित्राधार नाम से प्रथम संग्रह प्रकाशित हुआ। सन 1918 में झरना कविता संग्रह प्रकाशित हुआ। सन 1937 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ने मंगलाप्रसाद पारितोषिक से इन्हें सम्मानित किया।

सज्जन, कल्याणी परिणय, राज्यश्री विशाख, कामना, जनमेजय का नागयज्ञ इनके नाटक हैं। कंकाल, तितली और इरावती इनके उपन्यास हैं। छाया प्रतिध्वनि, आकाशदीप, आँधी और इन्द्रजाल इनके कहानी संग्रह हैं। काव्यकला और अन्य निबन्ध इनकी निबन्ध रचना है।

Scanned by CamScanner

* अयोगवाहक :—

हिन्दी वर्णमाला में स्वरों और व्यजनों के बिच दो ऐसी ध्वनियाँ है जो न शुध्द्त : स्वर है और न व्यंजन । ये स्वर व्यजनों के योग से बनी है । ये ध्वनियाँ है अं और अः । इन्हे क्रमश : अनुस्वार और विसर्ग कहा जाता है ।

————*——*

→ लिखावट को सुधारो ।

Scanned by CamScanner